डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध–कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि — **डॉ. राजीव कुमार झा** –116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय** –121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. कल्याण कुमार झा** –133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय — **डॉ. संत साह** –137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय — **डॉ. साक्षी शालिनी** –140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. राकेश रंजन** –144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति — **डॉ. सुशांत कुमार** –153
डॉ०. गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन — **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय — **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन — **सोनल** –170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय — **अखिलेश कुमार** –176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. माधव कुमार** –180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पल्लवी** –185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश — **समीक्षा सुरभि** –188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ — **डॉ. प्रीति कुमारी** –200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता — **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय — **पल्लवी कुमारी** –211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. अंशु कुमारी** –216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय — **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय — **उषाकिरण खान** –225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — **भगवानदास मोरवाल** –227

सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — **डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार) — **डॉ. पूनम सिन्हा** –236

प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — **डॉ. पूनम सिन्हा** –243

डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. सुनीता गुप्ता** –258

डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा**, **डॉ. माधव कुमार** –263

अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय — **विनीता कुमारी** –268

प्रतिवेदन –271

मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की पहचान : डॉ० गोपाल राय

–डॉ० साक्षी शालिनी

"विभिन्न इतिहास ग्रंथ पढ़ने वाले फ्रांस की क्रांति बहुत अच्छी तरह जानने का दावा कर सकते हैं लेकिन जिन्होंने डिकेन्स का 'टेल ऑफ टू सिटीज', ड्यूमा का 'फॉल ऑफ बैसटील', ह्यूगो का 'ला-मिजरेबल' पढ़े हैं उन्होनें सचमुच उस महान घटना को अपनी आँखों से देखा है। अपनी सीमाओं और सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यासकार ने अपनी समाज-चेतना के विभिन्न रूप काफी ईमानदारी से प्रस्तुत किए हैं।"[1] जब अप्रैल 1956 में राजेन्द्र यादव राष्ट्रवाणी में लिख रहे होंगे तो उनके समक्ष 1954 में प्रकाशित रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' अवश्य रहा होगा। इसलिए कि रेणु ने सामाजिक चेतना के विभिन्न रूपों को बेहद ईमानदारी से 'मैला आँचल' में प्रस्तुत किया। कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय ने 'मैला आँचल' की विविध आयामी आलोचना प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि "इसमें जो चीज सबसे पहले सामने आती है वह है अंचल के निवासियों की निर्धनता, उनका मानसिक पिछड़ापन, जमींदार व तहसीलदार का शोषण, जातिगत आधार पर आपस की फूट और कमीनगी।"[2] इस तरह डॉ० राय रेणु के मैला आँचल में विभिन्न प्रसंगों को देखते हुए अफवाह, विज्ञान, शिक्षा आदि के साथ आंचलिक समाज के रिश्तों की पड़ताल करते हैं।

डॉ० राय के अनुसार आंचलिक जीवन ज्ञान एवं विचार पर आधारित नहीं होता है, बल्कि जीवन को गति देने में 'अफवाह' का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। 'मैला आँचल' में ग्राम्य मानस की बनावट में अफवाहों की भूमिका की पहचान करते हुए रेणु ने बेहद जीवंत प्रसंगों की योजना की है। अफवाहों के बहुत जीवित प्रसंग रेणु ने मैला आँचल में अनेक स्थलों पर नियोजित किए हैं। इसके साथ अफवाहों को प्रभावशाली बनाने के लिए यह सिद्ध करना जरूरी है कि सुनी हुई बात नहीं है, जबकि वह सुनी

हुई बात ही होती है। अफवाहों का जो सबसे बड़ा तर्क विधान है जो उसे विश्वसनीय आधार देता है, वह है– उसका साक्षी भाव। यहाँ देखें–''मुहरू के ससुर ने अपनी आँखों से देखा था ठीक आग में भूनी मछलियों की तरह लोगों की लाशें महीनों पड़ी रहीं। कौआ भी नहीं खा सकता मिलिट्री का पहरा था।''[3] अफवाहें बहुत संक्रामक होती हैं और यह संक्रामकता अज्ञान की हवाओं में फैलती है इसलिए इनमें कहीं कोई तर्क नहीं होता। इसी अफवाह चेतना का एक विकसित रूप मिथकीकरण की प्रवृत्ति है। अफवाह जब मान्य हो जाती है तब वह मिथक के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। अफवाह तात्कालिक होती है और मिथक में स्थायित्व होता है। लेकिन दोनों में एक सामान्य बिन्दु है। दोनों का आधार वस्तुगत नहीं होता। जो पूरी ग्राम्य चेतना है वह घटनाओं का मिथकीकरण करती है।

''उपन्यास में चित्रित ग्रामांचल की दूसरी पहचान है उसकी अंधविश्वास ग्रस्तता जो अशिक्षा और मानसिक पिछड़ेपन की उपज है। अशिक्षा एवं अंधविश्वास से ग्रस्त समाज की निर्धनता स्वयंसिद्ध तथ्य है।''[4] डॉ० गोपाल राय यह देखते हैं कि विज्ञान, शिक्षा, राजनीति के नयेपन के साथ आंचलिक समाज कैसा रिश्ता बनाता है, यह किसी भी आंचलिक उपन्यासकार के लिए महत्त्वपूर्ण चुनौती है कि वह इस रिश्ते को परिभाषित करे। मैला आँचल में अनेकों स्तरों पर इस रिश्ते को देखने और समझने की कोशिश की गई है। ज्ञान और विकास आंचलिकता के धरातल पर उतर कर किस तरह परिवर्तित होते हैं अथवा वे ग्राम्य-जीवन को किस कोण से छूते है इसके अनेक प्रसंगों को बहुत प्रभावशाली ढंग से रेणु ने चित्रित किया है। डॉ० गोपाल राय मलेरिया सेंटर खुलने का उदाहरण देते हैं। उनके अनुसार यह सेंटर एक नई चेतना का वाहक है। लोक जीवन में ज्ञान, यांत्रिक व तार्किक स्तर पर ग्रहण नहीं होता। जीवन के संस्कार और उसकी परिस्थितियाँ ज्ञान के वस्तुगत आधार को अपने अनुरूप रूपांतरित करती हैं–''मलेरिया बुखार मच्छर काटने से होता है, मगर कुनेन खाने से जितना भी मच्छर काटे कुछ नहीं होता। ततमा टोली में महगू दास के घर के पास बलदेव की बात को लोग बहुत अचरज से सुन रहे हैं। आँगन की औरतें भी घूँघट काढ़े टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, अब रात भर गोइठा जलाकर धुआँ करने का झंझट नहीं। काटे चाहे जितना मच्छर।''[5] अजीब स्थिति है। यह जो कुनैन की गोली है उसे अवतारी प्रताप के साथ बलदेव बता रहे हैं। उसे उतने ही चमत्कारिक रूप में लोग सुन रहे हैं। डॉ० गोपाल राय ग्राम्य अंचल में व्याप्त

इस पिछड़ेपन का विश्लेषण करते हुए लिखते हैं–"अनेक ग्रामीण पिलही, कालाजार, मलेरिया, पायरिया, गठिया आदि रोगों से ग्रस्त हैं। बच्चे रोग के निदान के बिना आनन-फानन में मर जाते हैं और उसका दोष किसी डाइन के मत्थे मढ़ दिया जाता है। और इस गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता आदि का कारण क्या है? वह है जमींदार और उसके कारिंदे तहसीलदार तथा अन्य धनी किसानों द्वारा किसानों का शोषण।"[6]

रेणु ने इस उपन्यास में बाहरी ज्ञान के अनेक सूत्रों की पहचान की है, उनमें एक है रेडियो। रेडियो का संबंध तकनीक से है। तकनीक के साथ ग्राम्य समाज का कोई वस्तुगत संबंध नहीं बनता। एक तांत्रिक किस्म का संबंध बनता है। बिना मुँह धोए आप बैठ गए तो भगा देगा कि मुँह धोकर आइए। बिना अलौकिकता की धारणाओं को लागू किए वह ज्ञान, तकनीक, और विकास के किसी संदर्भ को ग्रहण नहीं कर सकता। इस ग्राम्य मानसिकता को बनाने और विकसित करने में देवी-देवताओं और धर्म की महत्त्वपूर्ण भूमिका की पहचान भी डॉ० राय करते हैं। बलदेव समझा रहे हैं–" अब रोज सुनिएगा बम्बई, कलकत्ता का गाना, महात्मा जी का खबर, पटुआ का भाव, सब इसमें आएगा। तार में ठेस लगते ही गुस्सा होकर बोलेगा बेकूफ! बिना मुँह धोए पास बैठते ही तुरंत कहेगा क्या आपने आज मुँह नहीं धोया है।"[7] इसलिए डॉ० गोपाल राय कहते हैं कि 'मैला आँचल' में चित्रित ग्रामांचल की दूसरी पहचान है अंधविश्वासग्रस्तता जो अशिक्षा और मानसिक पिछड़ेपन की उपज है। किसी को साँप काट लेता है तो वह प्रेतनी की करतूत बन जाता है। अंधविश्वासों की सृष्टि में अशिक्षित ग्रामीणों की कल्पना बड़ी उर्वर होती है।"[8] डॉ० राय इस बात की भी पहचान करते हैं कि मार्टिन साहब के खंडहर के बारे में ग्रामीणों की कल्पनाशक्ति ने अनेक मिथकों की सृष्टि कर रखी है। कमला नदी संबंधी मिथक भी ऐसी ही उर्वर कल्पना की देन है।

इस तरह 'मैला आँचल' में रेणु गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, अफवाह, मिथक, परिवर्तनहीनता को रेखांकित करते हैं। इसके पीछे के कारणों को जानने का प्रयास डॉ० गोपाल राय करते हुए दिखते हैं। उनका मानना है कि "इस प्रकार अंधविश्वास और अशिक्षा से ग्रस्त समाज की निर्धनता स्वयंसिद्ध तथ्य है। यह भी सुज्ञात है कि भारतीय ग्रामीण अंचलों की निर्धनता का कारण सदियों से विदेशी और भारतीय सामंतों का शोषण है। इस गरीबी और शोषण का चित्रण फणीश्वरनाथ रेणु ने नितांत यथार्थवादी

तरीके से किया है।'"[9] अर्थात् गोपाल राय एक तरफ ग्राम्य-जीवन की तमाम दुश्वारियों के लिए विदेशी शासन या औपनिवेशिक शासन को जिम्मेवार ठहराते हैं तो दूसरी ओर आंतरिक स्तर पर सामंतवादी व्यवस्था को भी इसके लिए जिम्मेवार मानते हैं। वस्तुत: बहुत हद तक ग्राम्य-जीवन की दुश्वारियाँ विदेशी शासकों एवं देशी सामंतों की अंत:क्रिया का ही प्रतिफल है। लेकिन इसके अतिरिक्त ग्रामीण समाज की रूढ़िवादिता व भाग्यवादिता भी इसके लिए जिम्मेवार है। लेकिन डॉ० राय महत्त्वपूर्ण कारणों की पहचान करने में सफल लगते हैं। अत: डॉ० राय ने मैला आँचल में लोकविश्वास के विभिन्न तत्त्वों की पहचान करते हुए तार्किक रूप से उनके कारणों पर प्रकाश डालने की सफल कोशिश की है जो भविष्य के आलोचकों व शोधार्थियों का हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

संदर्भ :

1. उपन्यास स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, पृ.-201
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, डॉ० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पृ. -243
3. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, डॉ० गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पृ. -243
5. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन
6. उपन्यास की पहचान : मैला आँचल, डॉ० गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन, पृ.-37
7. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन
8. उपन्यास की पहचान : मैला आँचल, डॉ० गोपाल राय, अनुपम प्रकाशन, पृ.-36
9. उपरिवत्, पृ.-36

सहायक प्राचार्य, हिन्दी
श्री ऋषिकुल संस्कृत महाविद्यालय,
वेदीवन मधुबन, पूर्वी चम्पारण

❑